यह संवाद एक भारतीय और हिंदी भाषा के बीच का है। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी इस कविता का आनंद लेंगे।

एक बार मुझे हिंदी ने बुलाया
सहलाया, फिर प्यार से बिठाया
फिर अपना वर्तमान बताया
अब तुमको तो कोई और है भाया।

मिलने आते हो एक बार, मैं हूँ वही हिंदी
जिसका उड़ाते हो मजाक, मैं हूँ वही हिंदी
मान पुराना मुझे छोड़ दिया, मैं हूँ वहीं हिंदी
गवारों की भाषा करार दिया, मैं हूँ वहीं हिंदी।

सुन उसकी बात मैं लज्जाया
थोड़ा मुझको भी रोना आया
आजादी के बाद हमने ही इसको हटाया
कैसे हुआ ये मैं समझ न पाया।

फिर वो बोली, मैं तुम्हारी भाषा और आशा होती थी
मेरी गहराईयों में जाने की तुम्हारी अभिलाषा होती थी
समभाव, मीठी बोली, अद्भुत बाणी मेरी होती थी
मिलावट कर मुझमें तुमने इसको दूषित बनाया।

फिर मैं सोचा, कितना रखा हमने इसका ध्यान
किसको बनाया हमने हमारी पहचान
संस्कृत हिंदी भूल, अंग्रेजी बोल हम समझते हमारी शान
क्या रह गई हमारी भारतीय संस्कृति की आन।

फिर वो बोली, अब तो तुम मेरा उत्थान करो
मेरा नहीं तो माताश्री संस्कृत का सम्मान करो
हमारा नहीं तो भारतीय दर्शनशास्त्र का ज्ञान करो
नहीं तो फिर ना तुम भारतीय होने का गुमान करो।

हिंदी से मैं आँखें मिला ना पाया
देख इसे अंग्रेज हर्षाया, मन ही मन मुस्काया
हमने और इनकी सरकारों ने इसको हटाया
कैसे तड़प रहा है भारतीय संस्कृति का साया।

फिर वो बोली, धर्मशास्त्र, राजशास्त्र का कुछ ध्यान करो
जीवशास्त्र, रसायनशास्त्र, शिल्पशास्त्र पर अनुसंधान करो
वास्तुशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र का सम्मान करो
योगशास्त्र, संगीतशास्त्र, नाट्यशास्त्र का नित अभ्यास करो।

भारतीय होने का गर्व अब मुझको समझ में आया
नासमझ था, इसीलिए 75 वर्षों तक मैं इंडियन कहलाया
चारों दिशाओं में था देश सोने की चिड़िया कहलाया।
इसने ही मानवता और वसुधेव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ाया।

चालीसा, आरतियों में पुराण तुम पढ़ जाते हो
कम शब्दों में बहुत कुछ तुम बोल और पढ़ पाते हो
अनजान बनके तुम फिर चोरों के गीत गुनगुनाते हो
इतनी ही समझ बाकी, ये भी जो तुम समझ न पाते हो।

ये सुन महानता मैंने जानी, फिर ठानी,
याद रखेंगे ऋषियों-गुरुओं की वाणी,
पूर्ण आजादी अब हमको है पानी
संस्कृति क्रांति भारत में हमको है लानी।

-- शुभम सिंगल,
तृतीय वर्ष, यांत्रिक अभियांत्रिकी